REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

# उत्तर बिहार में स्त्री शिक्षा की प्रगति

डॉ. पंकज कुमार
एम० ए०, बी० एड०, पी–एच० डी०

## भूमिकाः–

भारतीय समाज में प्राचीन काल से शिक्षा अथवा विद्या का स्वरूप अत्यन्त ज्ञानपरक सुव्यवस्थित और सुनियोजित था। जिसमें व्यक्ति के लौकिक और परलौकिक जीवन के लिये विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा से मनुष्य में ज्ञान का उदय होता है। मनुष्य के जीवन में विद्या अथवा ज्ञान का अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। शिक्षा से मनुष्य का जीवन समृद्ध और प्रसन्न होती है। विद्या से मनुष्य अपना जीवन सार्थक करता है। इसके बिना उसका जीवन निरर्थक और हीन रहता है। इस प्रकार शिक्षा का आदर्शात्मक विनियोग मनुष्य को क्रियाशील और समृद्ध बनाता है।

प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। ज्ञान और शिक्षा में वे किसी भी प्रकार पुरूषों से कम नहीं थी। ऋग्वेद में अनेक विदुषियों के विषय में जानकारी प्राप्ति होती है। जिन्होंने अनेकानेक मंत्र और ऋचाओं की रचना की थी। लोपामुद्रा, विश्वधारा, आत्रेयी, अपाला, काक्षीवती, घोषा आदि विदुषी नारियां इनमें अधिक प्रसिद्ध है। उपनिषदों में भी अनेक विद्वान स्त्रियों के संदर्भ मिलते हैं। जिनमें गार्गी परम विदुषी महिला थी। गार्गी ने जनक की राज्यसभा में याज्ञवल्क्य जैसे विद्वान महापुरूष को अपने गूढ प्रश्नों से मूक कर दिया था।

ऐसा प्रतीत होता है कि सूत्रायुग में पुरूष की तरह स्त्रियां भी शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करती थी। ऋषि तरपण के समय गार्गी पांचकन्वी, सुलमा, मैत्रोयी, बड़वा, प्रतिथेपी आदि कई नारियों के भी नाम लेने का निर्देश किया गया था। उस युग में दो प्रकार की स्त्रियां थीं– एक साहमोवधू और दूसरी ब्रह्मवादिनी। साहमोवधु विवाह होने के पहले तक ब्रह्मचर्य का अनुपालन करती थी तथा ब्रह्मवादिनी जीवन पर्यन्त ज्ञानार्जन में लगी हुई ब्रह्मचर्य का अनुपालन करती थी। अध्यापन कार्य करने वाली स्त्रियां आचार्य और उपाध्याय कही जाती थी।

महाकाव्यों में भी स्त्री शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। कौशल्या और तारा मंत्रवेद नारियां थी। सीता नित्य संध्या पूजन करती और आत्रेयी वेदान्त का अध्ययन करती थी कैकेयी अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा में निष्णांत थी। महाभारत में सुलभा को जीवन पर्यन्त वेदान्त मरते हुए दर्शित कराया गया है। द्रौपदी तो पण्डिता थी ही। उत्तरा ने अर्जुन ने संगीत और नृत्य की शिक्षा प्राप्त की।

परवर्ती काल में नारी शिक्षा पर प्रतिबंध लगने लगा था, यद्यपि बौद्ध परंपरा से विदित होता है कि स्त्रियां सुशिक्षित हुआ करती थी। संघ–मित्र श्रीलंका जाकर बौद्ध शिक्षा प्रचार में संलग्न हुई। ये ही गाथा में लगभग 50 भिक्षुणियों की कविताएं संकलित है जो उनकी प्रतिभा और ज्ञान को व्यक्त करती है। जैन परम्पराओं में उल्लिखित है कि जयन्ती सहस्त्रानीक आदि विदुषी महिलाएं थी। उपाध्याय की पत्नी को उपाध्यायी तथा आचार्य की पत्नी को आचार्यानी कहा जाता था। अध्ययन करने वाली छात्राओं को अध्येत्री के नामत से संबोधित किया जाता था। पतंजलि ने औदमेंध्या नामक आचार्य का उल्लेख किया है। उसमें पढ़ने वाले छात्र औद्यमेद्य कहलाते हैं।

## बौद्ध युग में स्त्री शिक्षा

बौद्ध युग में स्त्रियां प्रायः शिक्षित और विद्वान हुआ करती थी। विद्या धर्म और दर्शन के प्रति उनकी अगाध रूचि होती थी। बौद्ध की शिक्षिकाओं के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त की थी। वरीगाथा कवयित्रियों में 32 आजीवन ब्रह्मचारिणी और 18 विवाहित भिक्षुणियां थी। उनमें शुभ्रा, सुमेधा और अनोपमा उच्च वंश की कन्यायें थी जिनसे विवाद करने के लिए राजकुमार और संपतिशाली सेठों के पुत्र उत्सुक थे।

भिक्षुणी खेमा उस युग की उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्री थी जिनकी विद्वता की ख्याति दूर–दूर तक फैली हुई थी। संयुक्त निकाय से ज्ञात होता है कि सुभद्रा नामक भिक्षुणी व्याख्यान क्षेत्र में प्रसिद्ध थी।

राजगृह की संपतिशाली सेठ की पुत्राी भद्राकुण्ड केशा अपनी विद्या और ज्ञान से सबको आकृष्ट करती थी। ये उदाहरण इस बात के प्रमाण है कि उस युग में साधारण स्त्रियां ज्ञान पिपासु थी तथा उसके अन्वेषक और प्राप्ति में तल्लीन रहती थी, एक जातक से विदित होता है कि एक जैन पिता की चार पुत्रियों ने देश का भ्रमण करते हुए लोगों को दर्शनशास्त्र पर वाद–विवाद करने के लिए चुनौती दी थी।

अनेक महिलायें शिक्षिका बनकर अध्यापिकाओं का जीवन व्यतीत करती थी। जो अपना शिक्षण कार्य उत्साह और लग्न के साथ निष्ठापूर्वक करती थी। ऐसी स्त्रियां उपाध्याय कही जाती थी। ये उपाध्याय छात्राओं को पढ़ाया करती थी तथा उन्हें अन्य विषयों का ज्ञान प्राप्त कराती थी। इनकी अलग शिक्षा शालाएं हुआ करती थी। जहां महिलाएं जाकर शिक्षा ग्रहण करती थी। ऐसी महिला शिक्षण संस्थाओं का प्रबंध उपाध्याय ही करती रही। पाणिणी ने महिला शिक्षाशाला का उल्लेख किया है।

## मुगल काल में स्त्री शिक्षा

मुगलकालीन ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक सामग्री इस काल में स्त्रियों के निर्मित एवं स्थापित स्वतंत्र शैक्षिक संस्थाओं की चर्चा नहीं करते हैं। किन्तु सामान्य रूप से यही सोचा जा सकता है कि इन दिनों स्त्री शिक्षा के साधन लड़कों से भिन्न नहीं थी। साधारण वर्ग की लड़कियां लड़कों के विद्यालय में ही शिक्षा ग्रहण करती थी। किंतु कम उम्र में विवाह हो जाने के कारण उसकी शिक्षा अधूरी रह जाती थी। राजघरानों अथवा उच्चवर्ग की स्त्रियां योग्य शिक्षिकाओं के द्वारा अपने घरों पर ही शिक्षा प्राप्त करती थी। मुसलमानों में कुछ सम्पन्न व्यक्ति के आवासों में ही मकतब स्थापित थे जहां मुस्लिम लड़कियां धर्मशास्त्र एवं लौकिक विषयों पर शिक्षा प्राप्त करती थी। इन मकतबों में मध्यवर्ग की पढ़ी लिखी स्त्रियां शिक्षिका का पद संभालती थी। लोकप्रिय मनोरंजन तथा लोकगीतों के माध्यम से मुगलकालीन स्त्रियां शिक्षा ग्रहण पूर्व करती थी। हिन्दू स्त्रियां अनेकानेक सामाजिक धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा अपनी शिक्षा पूरी करती थी, स्त्रियों का पाठयक्रम भी लड़कों के पाठयक्रम से मौलिक रूप से भिन्न नहीं था। स्त्री शिक्षा का उद्देश्य एक सफल गृहिणी का निर्माण था, न कि एक प्रभावोत्पादक वक्ता अथवा राजनीतिज्ञ आदि। अतः लोग उन्हीं प्राथमिक शिक्षा के समापन से ही संतुष्ट हो जाते थे। भाग्यशाली स्त्रियां जिन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता था, वे लड़कों के पाठयक्रम को ही अपनाती थी। उनके पाठयक्रम में विभिन्न शास्त्र व्याकरण, साहित्य, नाटक, अलंकार आदि विषय सम्मिलित थे। इन विषयों के अतिरिक्त मुगलकालीन स्त्रियां संगीत, नृत्य तथा विभिन्न वाद्य यंत्रों को बजाने की प्रशिक्षण के काफी दिलचस्पी रखती थी।

मुगल सम्राट अपनी पुत्रियों की शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रहते थे। माल्सेराट के अनुसार अकबर राजकुमारियों की शिक्षा के प्रति विशेष सावधानियां बरतता था। मुगल हरम में आतुन मामा मुगल राजकुमारियों की शिक्षा की देखभाल करती थी। उन्हें पढ़ने–लिखने, सिने–पिरोने के अतिरिक्त फारसी तथा अरबी सिखाया जाता था। वे कुरान का विशेष रूप से अध्ययन करती थी। मुगल राजकुमारियों का खेलकुद, घुड़सवारी, निशानेबाजी, तीरंदाजी के अतिरिक्त संगीत तथा ललित कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

इस काल में सुसंस्कृत मुगल राजकुमारियों में गलुबदन बेगम, गुलरूख बेगम, सलीमा मुल्ताना, जान बेगम, नूरजहां, मुमताज महल, सती उन्नीसा, जहांआरा जेबुन्निसा आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कुछ ऐसी थी जो सिर्फ शिक्षा ही नहीं, वरन उन्होंने शिक्षा के विस्तार हेतु महत्वपूर्ण प्रयत्न भी किए। हुमांयू की स्त्री बेग बेगम ने अपनी पति की समाधि के समीप एक मदरसे की स्थापना कीथी माहम अनगा ने दिल्ली में एक मदरसे का निर्माण करवाया था। शाहजहां की पुत्री जहांआरा ने आगरा में जामा मस्जिद के पास एक मदरसे की स्थापना की थी।

मुगल काल में मुगल बादशाहों साथ में संपन्न वर्ग के लोगों ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में राजपरिवार की तरह अपनी पुत्रियों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत बनाने का प्रयास किया। कवि मुकुन्दराय, बनमाली दास, केशव दास आदि तत्कालीन विद्वानों ने इन वर्गो की अनेक स्त्रियों का उल्लेख किया है जो अपनी शिक्षा के प्रति अनुराग के लिए विख्यात है। ऐसी स्त्रियों में साहित्य को समृद्ध कर दिया। इन स्त्रियों ने इन्द्रमति, गंगा–यमुना, कालमशी देवी, दयाबाई, साहजी, बाई मीराबाई, बाबरी, साहेब, सांजे कुमारी ताज, चन्द्रावती, रूपमती, तीनतरंग, पूवीन राय, रात्नावली कवि रानी चौबे चम्न्या देवी, पदमचारिणी, प्रियम्बदा विशेष रूप में उल्लेखनीय है।

इस प्रकार मुगल काल की कुछ विदुषी आलोकित स्त्रियों तथा कवियत्रियों ने अपने प्रकाश तथा आभा से संपूर्ण स्त्रीत्व को आलोकित किया। इसके बावजूद सामान्य रूप से मुगल काल में स्त्री शिक्षा राज परिवार एवं उच्च वर्ग के लोगों के मध्य ही सीमित रहा और देश की अधिकांश स्त्रियां विशेष रूप से निर्धन वर्ग तथा ग्रामीण परिवेश में रहने वाली स्त्रियां अशिक्षित ही रही।

## महिला शिक्षा में ब्रह्म समाज का योगदान

महिला शिक्षा के विकास के लिए ब्रह्मसमाज का योगदान उल्लेखनीय है। ब्रह्म समाज ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास किया। लेकिन उस समय यह बहुत कठिन कार्य था, लड़कियों को स्कूल में भेजा जाए। फिर भी अनेक कठिनाईयों को बावजूद ब्रह्मसमाजी अघोर कामिनी राय पटना के बांकीपूर में 1892 ई0 गर्ल्स स्कूल खोलने में सफल हुई। वह जीवन पर्यन्त महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए सक्रिय रही। यह स्कूल डोनेशन पर चलना शुरू हुआ। अनेक तरह की आर्थिक कठिनाइयों से इसे गुजरना पड़ा।

1896 में विलियम बोल्टेन तत्कालीन चीफ सेक्रेटरी ने बांकीपुर गर्ल्स स्कूल का भ्रमण किया और वहां के प्रबंधन से काफी प्रसन्न हुए। इस स्कूल की आर्थिक स्थिति को खराब देखकर उन्होंने तत्काल स्कूल को सरकार के अधीन करने का आदेश दिया। 1896 ई0 में स्कूल सरकारी हो गया। इस तरह अधोर कामिनी देवी का परिश्रम व्यर्थ नहीं गया। इस स्कूल में मुख्य तौर पर मध्यवर्गीय बंगाली और बिहारी परिवार की लड़कियां अध्ययन करती थी। लेडी प्रिसपल बनलता देवी के समय यह स्कूल प्रगति के शिखर पर पहुंचा और बिहार के प्रथम गर्ल्स हाई स्कुल होने का गौरव प्राप्त किया। आज भी यह स्कुल सफलतापूर्वक संचालित है और इसे पल्स टू हाई स्कुल का दर्जा मिला है।

ब्रह्मसमाज द्वारा पटना में बालिका विद्यालय की स्थापना हुई थी। 1934 के स्कूल के बाद इसे दरियापुर में किराऐ के मकान में शिफ्ट किया गया। आगे चलकर यह हाई स्कूल में बदल गया। 1944 में वहां से मैट्रिक का प्रथम बैच सेन्टअप हुआ। बिहार सरकार के शिक्षा विभाग ने इस स्कूल को मान्यता दे दी साथ ही दिन प्रतिदिन छात्राओं की संख्या बढ़ने से उनके लिए जगह की समस्या हो गई। 1952 में स्कूल को कदमकुंआ में शिफ्ट किया गया। पुनः 1958 में सरकारी निर्णय के अनुसार वहाँ सातवां वर्ग एवं उससे नीचे के वर्ग की लड़कियों को बारी रोड स्थित भवन में शिफ्ट किया गया जबकि उससे ऊपर वर्ग की छात्राएं कदम कुआं स्थित भवन में ही रहीं। इस तरह 1958 के बाद ब्रह्मसमाज की दो प्रबंधन कमेटियों ने स्कूल को संभाला बालिका विद्यालय हाई स्कुल और बालिका विद्यालय मिडल स्कूल। आगे चलकर इस स्कुल का नाम रवीन्द्र बालिका विद्यालय हो गया और इसके नये भवन का उद्घाटन 1 जनवरी 1964 को मुख्यमंत्री सत्येन्द्र नारायण सिन्हा ने किया।

छोटानागपुर के गिरीडीह में ब्रह्मसमाज ने लड़कियों के लिए छोटानागपुर गर्ल्स हाई स्कुल की स्थापना 1911 ई0 में किया। प्रारंभ में इसमें बंगाली लड़कियां ही पढ़ने आती थी। स्कूल के प्रथम हेडमास्टर कृष्ण कुमार बसाके ने स्कूल को बनाने में पूरी उर्जा झोंक दी। तत्काल शिक्षा मंत्री एस फखरूद्दीन के द्वारा अनुदान की घोषणा से स्कूल की आर्थिक स्थिति संभल गई।

1868 ई0 में ब्रह्मसमाज ने भागलपुर जिले में महिला शिक्षा की प्रगति के लिए गर्ल्स स्कुल की स्थापना की। धीरे–धीरे छात्राओं की संख्या स्कुल में बढ़ने लगी। 1881 में प्रबंधन कमेटी ने वर्तमान सीएमएस हायर सेकेन्डरी स्कूल में निकट जमीन का एक टुकड़ा को खरीदा। राजा साहब चन्द्र बनर्जी जो भागलपुर के प्रतिष्ठित वकील थे, ने स्कूल के भवन निर्माण की पेशकश की। उनकी माता के नाम पर स्कूल का नाम मोक्षदा गर्ल्स स्कूल पड़ा। स्कूल के प्रथम वर्ष में यहां कुल 8 छात्राएं नामांकित हुई। डॉ0 कादंबिनी गांगुली भारत की पहली महिला मेडिकल ग्रेजुएट उन्हीं आठों लड़कियों में से एक थी।

कादंबिनी गांगुली के अलावे उसी बैच में वो बिहारी लड़कियां नामांकित थी जो मिरजानहाट के शिव शरण लाल की पुत्रियां थी। शिवशरण लाल उस समय स्कूल के डिप्टी इंस्पेक्टर थे।

ब्रह्मसमाजी उर्मिला देवी के हेड मिस्ट्रेस (1926–58) काल में स्कुल ने काफी प्रगति की। छात्राओं की संख्या काफी बढ़ने लगी और यहां उच्च कक्षाएं भी चलने लगी। महात्मा गांधी के द्वारा प्रारंभ सविनय अवज्ञा आंदोलन ने महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया। उर्मिला देवी की पहल से इस स्कूल को पटना विश्वविद्यालय से 1933 में संबन्ध प्राप्त हुआ। लड़कियां मैट्रिक की परीक्षा में शामिल होने लगी।

मोक्षदा गर्ल्स हाई स्कुल में मैट्रिक उतीर्ण होने के बाद लड़कियों के पास उच्च शिक्षा का विकल्प नहीं था। अतः बहुत से अभिभावकों ने स्कुल क प्रिंसिपल और सेक्रेटरी से मिलकर गर्ल्स कॉलेज खोलने का निवेदन किया। सेक्रेटरी कृष्ण चन्द्र की पहल से जो लड़कियों के स्कुल प्रारंभ होने से पूर्व कोचिंग देना शुरू किया और टी. एन.बी. कॉलेज के प्राध्यापकों से वर्ग चलाने का अनुरोध किया गया। इस तरह मोक्षदा गर्ल्स स्कुल परिसर में कॉलेज चलने लगा। उनके तथा अन्य ब्रह्मसमाजियों के निरंतर प्रयास से 1949 ई0 में भागलपुर में महिला कॉलेज की स्थापना हुई। शारदा वेदालंकार कॉलेज की पहली महिला प्रिसीपल हुई। इसमें महिला अध्यापकों की नियुक्ति हुई। उर्मिला देवी यहां बंगाली पढ़ाती थी और कॉलेज का प्रबंधन देखती थी। उनके संबंध में डॉ0 शारदा बेदालंकार ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए लिखा है कि उर्मिला देवी अपने अपने आप में एक संस्था थी।

नरेश मोहन ठाकुर ने इस कॉलेज को काफी भूमि भवन निर्माण के लिए गोसाई घाट में दे दी। इसलिए कॉलेज का नाम उनकी माता सुन्दरवती देवी के नाम पर सुन्दरवती महिला महाविद्यालय पड़ा। जो आज भी भागलपुर विश्वविद्यालय का प्रतिष्ठित संस्थान है।

दरभंगा की एक बंगाली विलियम विधवा महिला श्रीमती खिरदंवाला देवी ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास किया। उन्होंने दरभंगा में एक गर्ल्स प्राइमरी स्कूल प्रारंभ किया यही स्कूल दीदी मंदिर स्कुल के नाम से प्रारंभ हुआ।

इसी तरह मुजफ्फरपुर में चैयपमैन गर्ल्स स्कुल खोलने में स्थानीय बंगाली लोगों का ही योगदान था। इस स्कुल को खोलने के पीछे हरिसदन भादुरी की प्रेरणा थी। मुजफ्फरपुर के स्थानीय वकील शरतचंद्र चक्रवर्ती की पत्नी श्रीमति माधुरी लता देवी का प्रयास सराहनीय रहा। माधुरी लता देवी रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुत्री थी।

ब्रह्मसमाजी ने छपरा में हेमचन्द्र मिश्रा और डालटेनगंज में राय बहादुर केदारनाथ दत्त द्वारा गर्ल्स स्कुल खोला गया। रांची में श्रीमती कमला बोस जो भूगर्भशास्त्री पीएन बोस की पत्नी थी, बींसवी सदी के प्रारंभ में रांची में गर्ल्स स्कुल खोला जो रांची गर्ल्स स्कूल के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

## महिला शिक्षा में आर्यसमाज का योगदान

महिला शिक्षा के क्षेत्रा में आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान दिया। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने महिला शिक्षा पर काफी जोर दिया था। उन्होंने लड़का और लड़की दोनों के 8 वर्ष की उम्र में स्कुल में बिना किसी भेदभाव के नामांकन पर जोर दिया। बिहार के आर्य समाज ने गर्ल्स स्कुल खोलने की प्रक्रिया डीएवी पैटर्न पर प्रारंभ की जो सफल हो चुका था। जहां–जहां आर्य मंदिर खोलने गये वहाँ स्कुल भी खोले गए। आर्यसमाज द्वारा लड़कियों के लिए गर्ल्स स्कुल खोला गया तो उन्हें भी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। आर्यसमाज के सदस्य ने बिहार में डीएवी के रूप में गर्ल्स स्कुल और गुरूकुल के रूप में भी खोला। लेकिन गरूकुल को सफलता नहीं मिली जबकि डीएवी स्कुल को बढ़ने का मौका मिला। आर्यसमाज ने 1930 में सीवान में आर्य कन्या मिडिल स्कुल खोला। प्रारंभ में यहां महिला शिक्षा की कमी महसूस की गई। आर्थिक स्थिति भी दयनीय रही। लेकिन बाद में छात्राओं की संख्या बढ़ने लगी तब लड़कियों के लिए हाई स्कुल खोलने पर विचार हुआ। इस तरह 1944 में आर्य कन्या उच्च विद्यालय की स्थापना हुई। आर्य समाज द्वारा सीवान, छपरा के अलावा पटना, मुंगेर, रांची, मुजफ्फरपुर में गर्ल्स मिडिल स्कुल के अलावा गर्ल्स हाई स्कुल खोला गया।

## बिहार में आर्य समाज द्वारा स्थापित मिडिल स्कुलः–

1. आर्य कन्या विद्यालय, बाकीपुर, पटना
2. आर्य कन्या उच्च विद्यालय, मुंगेर
3. आर्य कन्या विद्यालय बड़हिया, मुंगेर
4. आर्य कला विद्यालय सोहसराय (नालंदा)
5. आर्य कन्या विद्यालय, मोकामा
6. आर्य कन्या विद्यालय, पुनाईचक (पटना)
7. आर्य कन्या विद्यालय, जमालपुर (मुंगेर)
8. आर्य कन्या विद्यालय, रक्सौल (पूर्वी चम्पारण)
9. आर्य कन्या विद्यालय, बाढ़ पटना
10. दयानंद कन्या विद्यालय, खुशरूपुर (पटना)
11. गंगा देवी आर्य कन्या विद्यालय, साहेबगंज (छपरा)
12. बाल विकास माध्यमिक विद्यालय, चंदवारा (मुजफ्फरपुर)
13. आर्य कन्या विद्यालय, ध्रुर्वा (रांची)

## बिहार में लड़कियों के लिए हाई स्कुलः–

1. मिश्रीलाल साह उच्च विद्यालय, साहेबगंज (छपरा)
2. दयानंद आर्य कन्या विद्यालय, मीठापुर (पटना)
3. दयानंद आर्य कन्या विद्यालय, बांकीपुर (पटना)
4. आर्य वृत्ति कन्या उच्च विद्यालय, खगड़िया (मुंगेर)
5. भारती आर्य कन्या विद्यालय, जमालपुर (मुंगेर)
6. आर्य कन्या विद्यालय, सम्बलपुर (मुंगेर)
7. मुसधीलाल आर्य कन्या विद्यालय, मोकामा
8. दयानंद आर्य कन्या उच्च विद्यालय, खुशरूपुर (पटना)
9. आर्य कन्या विद्यालय, सीवान
10. आर्य कन्या उच्च विद्यालय धुर्वा (रांची)
11. दयानंद आर्य कन्या विद्यालय, बोकारो स्टील सीटी

आर्य समाज द्वारा संचालित इन स्कुलों में 1950 ई0 में गैर आर्य शिक्षकों की भी नियुक्ति की जाने लगी और गैर आर्य हेडमास्टर भी नियुक्त किए जाने लगे। इन स्कुलों ने निम्नवर्गीय छात्राओं को भी आकर्षित किया। 1850 ई0 में यहां अशिक्षित परिवारों की लड़कियां भी पढ़ने लगी। आर्य समाज द्वारा कॉलेज भी खोला गया। बैद्यनाथ प्रसाद की सीवान में डीएवी कॉलेज खोलने में मुख्य भुमिका रही। यह बिहार के श्रेष्ठ कॉलेजों में से एक था। आर्य सभा के अध्यक्ष पटना के नेत्रा चिकित्सक का डॅ0 दुखन राम के घर पर 1973 में पटना के बांकीपुर और मीठापुर में दो गर्ल्स स्कुल खोले गए।

## निष्कर्षः–

वस्तुतः स्वतंत्राता के पूर्व बिहार में आम जनता के बीच महिला शिक्षा की स्थिति लिंग भेद बाल विवाह, पर्दा प्रथा इत्यादि एवं देशी रियासतों तथा ब्रिटिश शासकों एवं उसके हुक्मरानों की उपेक्षापूर्ण नीतियों के कारण शिक्षा व्यवस्था का समुचित नीतियों के कारण शिक्षा व्यवस्था का समुचित संभव नहीं हो पाया लेकिन आजादी के समय तक इस स्थिति में काफी बदलाव आ चुका था। स्वतंत्रता के पश्चात स्त्री शिक्षा पर काफी बल दिया गया।

## संदर्भ सूची

1. मिश्र, जयशंकर–प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास 2004 पटना पृष्ठ– 536
2. श्रीवास्तव ए. एल मेडिवल इंडियन कल्चर, आगरा 1964

3. जाफर, एस.एम.– कल्चरल आस्पेक्टस ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया, पेशावर 1929 पृ0 85
4. जाफर एस. एम. एजुकेशन इन मुस्लिम इंडिया पेशावर 1936 पृ0 192
5. बरनी जियाउद्दीन तारीख ए फिरोज खाही अबैद अहमद जहां द्वारा रूपांतरित कलकत्ता 1862, पृ0 238
6. रिजवी सैयद अतहर अब्बास उतर तैमुर कालीन भारत भाग–1, अलीगढ़ 1958
7. साहु किशोरी प्रसाद मध्यकालीन, उतर भारतीय सामाजिक जीवन में कुछ पक्ष पटना 1981 पृष्ठ 161
8. मित्तल ए. के. – भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास आगरा पृष्ठ– 152